05 / 12 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

व्यर्थ संकल्पों को समर्थ बनाने से
काल पर विजयी अनुभव करना

➢➢ श्रेष्ठ संकल्पों से व्यर्थ को समर्थ बनाना

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण आत्मा कितनी पदमापदम भाग्यवान हूं

→ ये ब्राह्मण जीवन मुझ आत्मा का नया व अलौकिक जन्म है

■ जिसमे मुझ आत्मा को दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि मिली है जिससे मै आत्मा जब चाहूं और जितनी देर चाहूं भगवान से मिलन मना सकती हूं

➳ _ ➳ स्वयं भगवान ही मेरा हो गया वाह मेरा भाग्य वाह शुकिया मेरे बैठे प्यारे बाबा शुक्रिया

→ इस अलौकिक नये जीवन के नशे में झूमती याद मे मग्न मैं आत्मा बैठ जाती हूं बाबा के सम्मुख

→ बाबा अपनी वरदानी और पावरफुल दृष्टि से मुझ आत्मा को देख रहे है

→ बाबा की दृष्टि से मुझ आत्मा का किचडा जलकर राख होता जा रहा है

→ मुझ आत्मा की एलाय निकलती जा रही है और मुझ आत्मा का परमात्म लाइट से शुद्धिकरण हो रहा है और मैं सच्चा सोना बनती जा रही हूं

→ मुझ आत्मा का मैं मेरापन और हद के आकर्षण समाप्त होते जा रहे है

→ मैं आत्मा परमात्म शक्तियों को अपने अंदर समाती जा रही हूं और मैं आत्मा रुपी बैटरी को पावर हाऊस से जोड़ चार्ज कर रही हूं

→ मैं अपने अनादि स्वरूप मे अपने घर परमधाम मे हूं

→ सर्व शक्तियों को अपने मे समाकर मैं फरिश्ता धीरे धीरे आ जाती हूं वापिस इस साकारी ब्राह्मण जीवन में

→ बाहरी वातावरण में मनुष्यात्मायें बहुत हलचल मे है अनजाने डर से भयभीत है व्यर्थ चिंतित है पर मैं ब्राह्मण आत्मा व्यर्थ बाहरी हलचल व्यर्थ संकल्पों से सुरक्षित है

➳ _ ➳ मैं आत्मा ज्ञान सागर की संतान मास्टर ज्ञान सागर हूं

→ मुझ आत्मा को स्वयं भगवान दूरदेश से रोज पढ़ाने आते है रोज स्वयं मीठे बाबा ज्ञान खजानों से मेरी झोली भरते है श्रेष्ठ स्वमानों की माला पहनाते है

■ मैं आत्मा गाडली स्टूडेंट हूं

→ बाबा से मिले ज्ञान रत्नों के मनन मे बिजी रहने से मुझ आत्मा का व्यर्थ समाप्त हो रहा है

→ परमात्म याद मे रह हर कर्म करने से मुझ आत्मा के संकल्प समर्थ और श्रेष्ठ होते जा रहे है

→ मैं आत्मा अपना आत्म निरीक्षण करती हूं कि माया तभी आती है जैसे ही मैं आत्मा परमात्मा को भूल देहभान मे आकर कर्म करती हूं

→ अब मैं आत्मा कम्बाइंड स्वरुप मे रह हर संकल्प बोल और कर्म पर अटेंशन रख कर्म करती हूं

→ एक की याद मे रह मैं आत्मा मान शान की इच्छाओं से परे होती जा रही हूं

→ इच्छायें अच्छा नही बनने देती इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या के पुरुषार्थ पर अटेंशन रखती हूं

→ व्यक्त मे रहते व्यक्त की वस्तु वैभव से उपराम होती जा रही हूं

➳ _ ➳ अपनी चेकिग करती हूं अपने को निराकारी स्थिति व अव्यक्त स्थिति में जितना समय स्थित रहना चाहूं उतना समय उस स्थिति में स्थित नहीं हो पाती हूं या नही

→ मैं आत्मा जितना समय निराकारी स्थिति मे टिकना चाहूं उसके लिए अपने हर संकल्प पर अटेंशन रखती हूं

- मैं आत्मा सारा दिन का अपनी मन बुद्धि का टाइम टेबल सेट करती हूं
- मैं आत्मा अपने स्वमान की सीट पर सेट रहती हूं
- स्वयं भगवान मेरा साथी है

→ मैं ब्राह्मण आत्मा संगमयुग के महत्व को जान एक की याद मे रह अपना एक एक क्षण सफल कर रही हूं

→ कभी ज्ञान का मनन चिंतन करते तो कभी रूहानी ड्रिल करती अपने को बिजी रखती हूं

→ हरेक संकल्प पर अटेंशन रखते श्रेष्ठ संकल्पों से व्यर्थ को समर्थ मे बदल समय पर विजय का अनुभव कर रही हूं

- कोई भी परिस्थिति आने पर मैं आत्मा स्वमान की सीट पर अपने को सेट रख विजयी अनुभव करती हूं कि मैं कल्प कल्प की विजयी आत्मा हूं